International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-03-2026, Accepted: 02-04-2026, Published: 17-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 70-71

मालती जोशी की कहानियों में मध्यम वर्गीय स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति[1], श्रीमती शालिनी सिंह[2]
[1] विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर, छत्तीसगढ, भारत
[2] शोधार्थी, हिंदी विभाग, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
मालती जोशी जी ने अपनी कहानियों में जीवन की अनुभूतियों का सूक्ष्म एवं यथार्थ चित्रण कर, नारी जीवन में हो रही समस्याओं को अपनी कहानियों में स्थान दिया है। आम आदमी, कमजोर, असहाय तथा हाशिये पर खड़े लोगों की आवाज बनकर साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन को उजागर करती हैं। उच्च वर्ग के पास उत्पादन के साधन, धन, शक्ति और प्रभाव अधिक होता है। मध्यम वर्ग की स्थिति समाज में निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के बीच की होती है। मालती जोशी जी की कहानियों में शिक्षित वर्ग, व्यवसाय, नौकरी–पेशा, आय के सीमित साधनों वाले वर्ग का चित्रण हुआ है। इनकी अधिकांश कहानियों में समाज का मध्यम वर्गीय स्वरूप दिखाई देता है। खासकर स्त्री जीवन का वह रूप, जो अपने अस्तित्व के लिए परिवार एवं समाज से निरंतर संघर्षरत है। मध्यमवर्गीय परिवार में स्त्री के हितों को सदैव नजर अंदाज किया गया है। इन सबका यथार्थ चित्रण मालती जोशी जी की कहानियों में देखने को मिलता है।

मूल शब्दः मध्यम वर्ग, भारतीय समाज, शिक्षित वर्ग, आम–आदमी, स्त्री

मध्यम वर्ग का सामाजिक जीवन एवं आर्थिक जीवन औसत होता है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण जीवन में दरिद्रता घर कर जाती है। ऐसे में परिवार की स्त्री को अर्थाजन हेतु घर से कम बाहर निकलना ही पड़ता है। जबकि संपन्न वर्ग अपने अनुसार स्त्री के अधिकारों को नियंत्रित करना चाहता है। स्त्री के प्रति ऐसी हीन भावना, विभिन्न वर्गों के परिवारों में स्त्री जीवन की दास्तान को हिंदी के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में स्थान दिया है तथा उनके जीवन संघर्ष एवं ऐतिहासिक परिदृश्य को चित्रित करने का सदैव प्रयास किया है। भारतीय समाज में स्त्री का जीवन–संघर्ष ऐतिहासिक दृष्टि से भी प्राचीन है। स्वतंत्रता के पूर्व भी स्त्री का अस्तित्व मध्यम वर्गीय समाज में केवल परिवार की देखभाल तथा घर की चारदीवारी तक ही सीमित था। जीवन संघर्ष के कारण निम्न–मध्यम वर्गीय समाज में स्त्री अपना स्थान बनाने हेतु संघर्षशील रही है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का अस्तित्व नगण्य ही रहा है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के अनुसार –"स्त्री की गुलामी का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना की मनुष्यता का। मानव के आदिकाल में शरीर बल शोषण का आधार था। आज भी मानवेत्तर जगत में शरीर बल ही शोषण का आधार है। बाद में बुद्धि बल शोषण का आधार बना। फिर धन, पद, जाति, धर्म और व्यवस्था शोषण के कारण बने। स्त्री इन सभी आधारों पर सबसे ज्यादा शोषण हुई। उसे शिक्षा से अलग करके धन के अधिकार से वंचित करके व्यवस्था में पद या भागीदारी न देकर वंचिता की भूमिका में रखा गया।"[1] मालती जोशी जी की 'बकुल फिर आना' कहानी में उन्होंने मध्यम वर्गीय 17–18 साल की लड़की की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। मध्यवर्गीय परिवार की कन्या का अच्छे घर में विवाह, बिना दहेज के हो पाना संभव नहीं होता है। जिस घर का आर्थिक पक्ष मजबूत नहीं होता, वहाँ की लड़की की शादी मजबूरन ऐसे घर में करनी पड़ती है, जहाँ वर–पक्ष पर पहले से ही या तो कोई दोष होता है, या फिर परिवार की कोई अपराधिक छवि होती है। इस कहानी में बकुल का विवाह भी एक ऐसे दोहाजू के साथ कर दिया जाता है, जिसके परिवार पर उसकी पहली पत्नी को जलाकर उसकी हत्या कर देने का आरोप होता है। मां जी के यह पूछने पर कि ऐसे परिवार में उस लड़की ने विवाह क्यों किया जहां उनकी बेटी बकुल की पहले ही हत्या कर दी गई है, वह लड़की उनसे अपने परिवार की आर्थिक स्थिति बयान करती हुई कहती है– "मतलब यह की सस्ते में सौदा पट गया। उन लोगों ने कोई मांग नहीं रखी। शादी में ज्यादा तामझाम भी नहीं किया। न गाजे, न बाजे। न भीड़, न भड़क्का । न दान, न दहेज – तुरत–फुरत सब काम की निपट गया।"
"यूं जानबूझकर कोई मक्खी निकलता है!" वे अवाक् थीं।"
"हम लोग चार बहनें हैं मां जी!" लड़के लड़की ने शांत स्वर में कहा, दोनों बड़ी बहनों को पार लगाते–लगाते पिताजी का दीवाला पिट गया। नौकर–पेशा आदमी हैं बेचारे। जायदाद के नाम पर एक घर है जिसमें हम लोग रहते हैं। छोटी दीदी की शादी में वह भी रेहन रख देना पड़ा। ऐसे में अगर एक लड़की सस्ते में निपट जाती है तो क्या बुराई है?"
वे सिर से पांव तक सियार उठीं। दस तोला सोना और पंद्रह हजार नगद देने के बाद भी उनकी लड़की को नहीं बक्शा गया था। और इस दुबली–पतली नाजुक–सी लड़की को खाली हाथ भेज दिया है मां–बाप ने। इस पराए परदेस में उस पर जो बीतेगा, उसको तो कोई देखने–सुनने वाला भी नहीं।"[2] जोशी जी की एक अन्य कहानी 'दर्द का रिश्ता' में मधु की मां की आगे कॉलेज की पढ़ाई पर रोक लगा दी जाती है। यह उसके माता–पिता की मध्यम वर्गीय सोच का परिणाम था कि यदि लड़की को उच्च शिक्षा दी जाएगी तो उसके लिए वर भी उच्च शिक्षित होना चाहिए, जो मिलना कठिन है। इसी को याद दिलाती हुई नायिका मधु की मां से कहती है – "तुम क्यों रोई थीं, याद है दीदी? कॉलेज जाने का तुम्हारा अरमान मन में रह गया था! अम्मां–बाबूजी ने कहा था कि तुम्हें बी. ए. करा देंगे तो हम लड़का कहां से लाएंगे? आज वही अन्याय तुम अपनी बिटिया के साथ कर रही हो। पीढ़ियां बदल गईं पर हमारी मान्यताएं वहीं–की–वहीं हैं। हम उन्हें अम्मां–बाबूजी कहते थे बच्चे हमें मम्मी–पापा कहते हैं। बस, इतना ही फर्क आया है। बाकी सब तो वैसा–का–वैसा ही है।"[3]
मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति को दर्शित करने वाली जोशी जी की एक अन्य कहानी 'संदर्भहीन' है। इस कहानी में बताया गया है कि जैसे ही मध्यम वर्गीय परिवार पर किसी तरह की विपत्ति आती है, तो घर का आर्थिक बजट उथल–पुथल हो जाता है। और घर की स्त्री को उस विपत्ति से निपटने के लिए अपना स्त्री धन तक बेचना पड़ता है। इस कहानी में कुसुम के पति का एक्सीडेंट हो जाने से घर पर आई इस अकस्मात् विपत्ति के

कारण वह इसी ऊहापोह में डूबी रहती है कि अस्पताल का खर्च वह कैसे वहन करेगी? "पहली बार मैंने स्थिति की वास्तविकता को समझा । इनका एक्सीडेंट हो गया था, इन्हें प्राइवेट वार्ड में रखा गया है और इसके बाद हर कदम पर पैसे की आवश्यकता होगी– दवाइयां, इंजेक्शन, कमरे का किराया....
हे भगवान! महीने की पच्चीस तारीख के बाद मध्यवर्गीय शराफत को जिंदा रखना कितना कठिन होता है। और खासकर ऐसे समय में।
"सुनिए.... "कमरे की भीड़ छंटते ही मैंने सहमी–सी आवाज में मैडम को पुकारा। अपनी चारों चूड़ियां उनके आगे रखकर मैंने कहा, "देखिए, मैं तो यहां किसी को जानती नहीं। घर से किसी के आ जाने तक क्या कुछ रुपयों का इंतजाम कर सकेंगी?"[4] कहानी के इस अंश से स्पष्ट होता है कि विपत्ति आने पर मध्यम वर्गीय परिवार में एक घरेलू स्त्री की मनरूस्थिति कैसी दयनीय हो जाती है। 'अवसान एक स्वप्न का' कहानी में मध्यम वर्ग परिवार की कन्या का विवाह आर्थिक कमी तथा बढ़ती उम्र की वजह से नहीं हो पाता। भारतीय मध्यम वर्गीय समाज में यह समस्या आसानी से देखी जा सकती है। जहां कन्याओं की विवाह की उम्र इसलिए निकल जाती है क्योंकि माता–पिता के पास उनके दहेज के लिए पैसे नहीं होते हैं। जैसा कि देखा गया है कि यह हर घर की समस्या है कि पुत्र के विवाहोपरांत, पत्नि के घर में प्रवेश करते ही भाई अपनी मां तथा बहनों से मुहँ मोड़ लेता है। उनकी ज़िम्मेदारियों से खुद को अलग कर लेता है। वहीं बहू भी ससुराल वालों से खुद को और पति को अलग रखना चाहती है। यह इस कहानी के एक अंश से दर्शित होता है "अब माँ के सामने बस एक ही चिंता थी, दीदी की शादी। जैसे–जैसे दीदी की उम्र बढ़ती जा रही थी, माँ का धैर्य चुकता जा रहा था। उधर भाभी पर दिन–ब–दिन निखार आता जा रहा था। उसके लिए वह सौ–सौ जतन भी कर रही थीं। इधर दीदी दिन–पर–दिन बुढ़ा रही थीं। पहनने–ओढ़ने का उन्हें जरा भी शौक नहीं रहा था। सजने–सँवरने के प्रति भी वह उदासीन होती जा रही थीं।"[5] इसी संदर्भ को प्रस्तुत करती एक अन्य कहानी 'बाबुल का घर' है। इस कहानी में सुमि के पिता की मृत्यु के पश्चात उसे अपने भैया–भाभी के घर बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं तथा कम उम्र से ही अर्थार्जन करना पड़ता है। अपने विवाह का भी उसे कोई उत्साह नहीं रह जाता। सुमि अपने विवाह के पश्चात मां अपनी मां को अकेले भाई–भाभियों के भरोसे छोड़कर जाने से दुरूखी है। अपनी मां की लाचारी के बारे में सोचकर चिंतित है। "अभी–अभी रो चुकी उसकी आँखें एकदम सुनी थीं। उन आँखों में न लाज के डोरे थे, न सपनों के रंग। शायद कई रातों की जगी हुई थी। आँखों के नीचे स्याह घेरे बन गए थे। दुल्हन क्या ऐसी होती है? चेहरे पर जरा भी रौनक नहीं थी। मैं तो सोच रही थी कि इंजीनियर पति पाकर वह उड़ी–उड़ी फिरती होगी। पर उसके पाँवों में तो जैसे किसी ने मन–मन–भर की बेड़ियाँ डाल दी थीं। अम्मा की चिंता में तो वहां हँसना भी भूल गई थी। शादी के वक्त लड़कियों पर कैसा निखार आ जाता है, पर इसका तो अपना चम्पई रंग भी मटमैला पड़ गया था। और हैरत की बात तो यह थी कि घर में किसी को इसकी चिंता नहीं। सब अपने–अपने हिसाब–किताब में व्यस्त।"[6]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि मालती जोशी की अधिकांश कहानियाँ मध्यवर्गीय शहरी जीवन का दस्तावेज है। मध्यम वर्गीय परिवार की समस्याओं, मान्यताओं, परंपराओं एवं उनके आचार–विचार का बड़ा ही सुंदर, सहज एवं सटीक चित्रण जोशी जी की कहानियों में मिलता है। जोशी जी ने मध्यवर्गीय जीवन के विविध पक्षों को केंद्र में रखकर साहित्य रचा है। मालती जोशी जी की लगभग समस्त कहानियों में स्त्री केंद्र में है। जहां अन्य लेखिकाएं निम्न वर्गीय स्त्री–विमर्श को प्राथमिकता देती हैं, वहीं मालती जोशी जी मध्यवर्गीय स्त्री जीवन के लगभग सभी पहलुओं को अपनी कहानियों का विषय बनती हैं। उनकी कहानियों में आम जीवन से जुड़े विषय, जनमानस के संघर्ष, मेहनत तथा दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों को पार कर जाने का अदम्य साहस, कठिन परिस्थियों में भी जीवन जीने की ललक, पाठकों को आसानी से प्रभावित कर लेती है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. सृजनात्मक का विस्तार. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019, पृष्ठ संख्या 69.
2. जोशी, मालती. स्नेहबंध तथा अन्य कहानियां. दिल्ली: परमेश्वरी प्रकाशन, 2023, पृष्ठ संख्या 142.
3. जोशी, मालती. दर्द का रिश्ता. दिल्ली: साक्षी प्रकाशन, 2016, पृष्ठ संख्या 12.
4. जोशी, एक और देवदास. दिल्ली: साक्षी प्रकाशन, 2024, पृष्ठ संख्या 40–41.
5. जोशी, औरत एक रात. दिल्ली: परमेश्वरी प्रकाशन, 2020, पृष्ठ संख्या 51.
6. जोशी, बाबुल का घर. दिल्ली: साक्षी प्रकाशन, 2017, पृष्ठ संख्या 19–20.